ब्रह्माकुमारियों द्वारा 18 जनवरी को दादा लेखराज (उर्फ ब्रह्मा) के स्मृति दिवस के रूप में मनाया जाना कहाँ तक उचित?

शायद सारी दुनियावालों को पता न हो, किंतु जो व्यक्ति ब्रह्माकुमारी संस्था या उसके सदस्यों के नज़दीकी संबंध में आया हो, वह जानता होगा कि किसी ब्रह्माकुमार या ब्रह्माकुमारी के जीवन में 18 जनवरी का क्या महत्व है? ब्रह्माकुमारी संस्था के सदस्यों का यह मानना है कि सन् 1969 में इसी दिन संस्था के संस्थापक दादा लेखराज (उर्फ ब्रह्मा) ने अपना साकार शरीर त्याग दिया था और तबसे वे सूरज, चाँद, सितारों से भी पार स्थित सूक्ष्म वतन में सूक्ष्म शरीरधारी के रूप में निवास करते हैं और प्रति वर्ष आबू रोड या माउंट आबू, राजस्थान में पहले से निर्धारित कार्यक्रमानुसार ब्र.कु.गुलज़ार दादी जी के तन में प्रवेश कर अव्यक्त वाणी सुनाते हैं।

ब्रह्माकुमारी संस्था के दुनियाभर में स्थित केन्द्रों में 18 जनवरी को मेडीटेशन डे के रूप में मनाया जाता है और इस दिन विशेष रूप से दादा लेखराज (उर्फ ब्रह्मा बाबा) को याद किया जाता है। हालाँकि, दादा लेखराज के जीवित रहते समय ही भगवान शिव द्वारा उनके मुख से यह श्रीमत दी गई है कि दादा लेखराज उर्फ ब्रह्मा या किसी अन्य देहधारी का फोटो या चित्र नहीं रखना चाहिए; क्योंकि देह तो नश्वर है, पाँच तत्वों का बना हुआ है। ब्रह्माकुमारियों द्वारा ही प्रकाशित दिनांक 21.7.05 की ज्ञान मुरली के पृ.3 के मध्यांत पर लिखा हुआ है, "हमेशा समझो, शिवबाबा कहते हैं। इनका फोटो भी नहीं रखो। यह रथ तो लोन लिया है।" इस संबंध में परमपिता शिव की ज्ञान मुरली के कुछ और उदाहरण निम्नानुसार हैं :

- **"इनका (ब्रह्मा का) फोटो भी तुम मत रखो। कोई भी देहधारी (मम्मा, बाबा, दीदी, दादी आदि) का फोटो नहीं रखना है।" (मु. 27.3.86 पृ.1)**
- **"बाबा समझते हैं इनमें अज्ञान है जो फोटो के लिए जिद करते हैं।.....यह देह तो मिट्टी है, इनका फोटो क्या देखना है! भक्तिमार्ग की जो रसम है वह ज्ञानमार्ग में हो न सके।" (मु.13.11.70, पृ.2 अं.)**

किंतु, दादा लेखराज के देहावसान के पश्चात् दुनियाभर के ब्रह्माकुमारी आश्रमों में तथा ब्रह्माकुमार-कुमारियों के घरों में दादा लेखराज उर्फ ब्रह्मा और सरस्वती के चित्र देखे जा सकते हैं, और अब तो ब्रह्माकुमारी संस्था के सार्वजनिक कार्यक्रमों (विशेषकर मेगा प्रोग्राम्स) के निमंत्रण पत्रों एवं प्रचार सामग्री में ब्रह्मा और सरस्वती के चित्रों के स्थान पर वर्तमान प्रशासिकाओं के चित्र छपने लगे हैं, जो कि श्रीमत का सरासर उल्लंघन है।

इसी प्रकार, सभी ब्रह्माकुमार-कुमारियों के लिए परमपिता शिव की श्रीमत है कि उन्हें यथासंभव कर्म करते हुए निराकार परमपिता शिव को उनके मनुष्य शरीर रूपी चोले के द्वारा निरंतर याद करना चाहिए। भक्तिमार्ग में मनाए जाने वाले त्यौहारों की तरह किसी एक विशेष दिन या मुसलमानों की तरह केवल दिन में पाँच बार या फिर एक जगह बैठ कर गीत या लाल लाइट के सहारे याद नहीं करना चाहिए। इस संबंध में ब्रह्माकुमारियों द्वारा प्रकाशित ज्ञान मुरलियों में परमपिता शिव की श्रीमत निम्नानुसार है:

- **"बाबा को तो घड़ी-घड़ी याद करना है। नेष्ठा(निष्ठा) में एक जगह बैठने की बात नहीं, चलते-फिरते याद करना है।" (मु.01.10.05, पृ.3 आ.)**

- "बाप कितना ऊँच पढ़ाते हैं। इसमें सिर्फ बुद्धि से बाप को याद करना है। बत्ती आदि जगाने की भी दरकार नहीं।" (मु.23.10.05, पृ.2 म.)
- "यहाँ तो बाप कहते हैं, मुझे याद करो। यह है अजपाजाप। मुख से कुछ बोलना नहीं है। गीत भी स्थूल हो जाता है।.....नहीं तो फिर गीत आदि याद आते रहेंगे।.....तुमको आवाज़ से परे जाना है। बाप का डायरैक्शन है ही मनमनाभव। बाप थोडे ही कहते हैं, गीत गाओ, रड़ी मारो।" (मु.11.11.05, पृ.2 अं., 3 आ.)

वास्तव में, ब्रह्माकुमारियों की मान्यता के विपरीत परमपिता शिव परमात्मा या दादा लेखराज ब्रह्मा की आत्मा इस मनुष्य सृष्टि रूपी रंगमंच को छोड़कर चले नहीं गए हैं, जिसकी स्मृति में भक्तिमार्गीय श्राद्ध की तरह कोई कार्यक्रम की आवश्यकता हो, किंतु वे तो किसी और स्थान पर तथा किसी और व्यक्ति के तन से धरती पर स्वर्ग स्थापित करने का अपना अधूरा कार्य पूरा कर रहे हैं। ब्रह्माकुमारियों द्वारा प्रकाशित साकार मुरली ता.4.10.05, पृ.2 के मध्य के अनुसार "बाप आया फिर चला जाएगा। उनके लिए ऐसे थोडे ही कहेंगे कि मर गया। जैसे शिवानंद के लिए कहेंगे, शरीर छोड़ दिया, फिर क्रियाकर्म करते हैं। यह बाप चला जाएगा तो इनका क्रियाकर्म, सेरेमनी आदि कुछ भी नहीं करना होता। उनके तो आने का भी नहीं पता पड़ता।"

वास्तव में, दादा लेखराज ब्रह्मा के द्वारा निराकार शिव ने मुखवंशावली ब्राह्मण वत्सों की रचना के लिए सन् 1969 तक केवल बेहद की माँ का पार्ट अदा किया और सन् 1976 से राम और कृष्ण की जन्मभूमि, शिव-शंकर भोलेनाथ की कर्मभूमि तथा पतितपावनी गंगा के लिए प्रसिद्ध उत्तर प्रदेश के ऐतिहासिक गाँव कम्पिल से किसी साधारण, पतित, अनुभवी मनुष्य शरीर रूपी रथ में प्रवेश कर गुप्त रूप से प्रजापिता ब्रह्मा अर्थात् पिता का पार्ट अदा कर रहे हैं और सच्चा गीता ज्ञान और राजयोग सिखा रहे हैं, जिसके लिए उन्होंने आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय की स्थापना की है।

आध्यात्मिक विद्यालय में किसी भी देहधारी का चित्र प्रदर्शित नहीं किया जाता है। केवल परमपिता शिव की श्रीमत पर तैयार किए गए ज्ञानयुक्त चित्र प्रदर्शित किए जाते हैं, जिनमें आत्मा, परमात्मा और इस मनुष्य सृष्टि चक्र के आदि, मध्य और अंत का ज्ञान समाया हुआ है। वास्तव में, परमपिता शिव का कहना है कि जीते-जागते मुकर्रर साकार शरीर रूपी रथ के द्वारा निराकार परमपिता को याद करना राजयोग की सही प्रक्रिया है, ठीक वैसे ही जैसे सोने की डिबिया में रखे हीरे को देखा जाता है; परंतु ब्रह्माकुमारी आश्रम में सिर्फ निराकारी ज्योतिर्बिंदु की याद सिखाई जाती है। साकार में आए शिवशंकर भोलेनाथ के पार्ट को नज़रअंदाज़ किया जा रहा है।

॥ ओम् शान्ति ॥